Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड जर्नल

वर्ष - 17 • अंक 1 • पूर्णांक 75 • जनवरी-मार्च-2024 • मूल्य : 100 रुपए

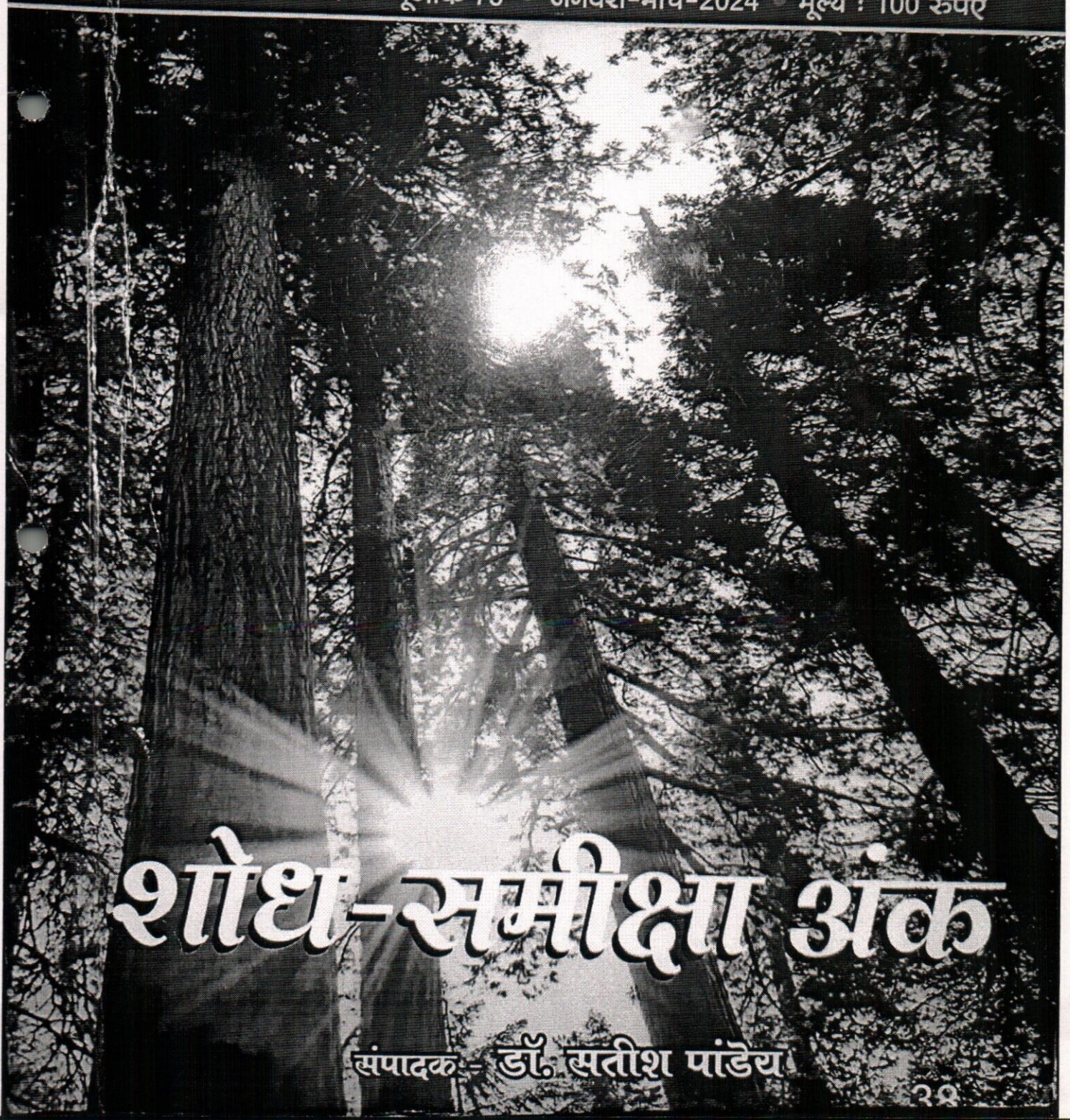

शोध-समीक्षा अंक

संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA
PIMPRI, PUNE-17

अनुक्रमणिका

1. अपने तईं 05-07
2. 21वीं सदी के उपन्यासों में किसान समस्या : डॉ. सीमा रानी 08-13
3. विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'खिलेगा तो देखेंगे' में यथार्थ और कल्पना -डॉ. कस्तूरी चक्रवर्ती 14-17
4. 'आवां' स्त्री संघर्ष की गाथा - सोनाली रावसाहेब घालमे 18-24
5. वैश्वीकरण और बाजारवादी संस्कृति में पिसते वृद्ध जीवन का आईना 'दौड़' उपन्यास - वंदना रमेश गुप्ता 25-30
6. सोफिया उपन्यास में चित्रित संवेदना - अर्पणा भारती 31-34
7. 'तमस' में अभिव्यक्त वृद्ध वेदना - डॉ. मनोज कुमार दुबे 35-39
8. भारतीय और प्रवासी जीवन के द्वंद्व की 'कहानी शराफत विरासत में नहीं मिलती' -संतोष कुमार यादव 40-45
9. महिला सशक्तिकरण का ज्वलंत दस्तावेज : शिवमूर्ति की कहानी केशर-कस्तूरी -डॉ. गीता यादव 46-49
10. 'अबादानी हो जाए' काव्य संग्रह में अभिव्यक्त किसान संवेदना - डॉ. महेश दवंगे 50-55
11. बल्ली सिंह चिम्मा के काव्य में समाज के बदलते नैतिक मूल्य एवं सत्ता-विमर्श - डॉ. सुरजीत सिंह वरवाल 56-60
12. संवेदनाओं की कवयित्री :अरुणा दुबलिश - डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट 61-66
13. समकालीन हिंदी कविता में समसामयिकता - डॉ सत्यनारायण स्नेही 67-75
14. अरुण कमल की कविताओं में राष्ट्रीय विचारधारा के विविध पक्ष : डॉ. ज्योत्सना राम 76-79
15. धर्म एक यात्रा है : पथ में प्रवर्तन के - गौरव गौतम 80-86
16. मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकता (लहरों के राजहंस व आधे-अधूरे के संदर्भ में) -नवनीत कौर 87-90
17. 'सीढ़ियाँ' नाटक में इतिहास और वर्तमान का समन्वय - मुन्ना कुमार 91-95
18. महर्षि कंबन के 'भारत' का मनोभाषिक पक्ष -दीपेंद्र कुमार / प्रो. टी कमलाबती देवी 96-101
19. साधुओं का जीवन व मनोविज्ञान और उपन्यास-अस्थाना - डॉ. प्रतिभा पांडेय 102-110
20. समाज, संवेदना, साहित्य, सिनेमा और एनिमल फिल्म - डॉ. चंद्रिका चौधरी 111-116
21. रियलिटी शोज की रियलिटी -डॉ. नीतू पी. जे. 117-121
22. राजनीतिक संघर्ष की यात्रा हादसे -डॉ. वैशाली विट्ठल खेडकर 122-126
23. भारतेंदु हरिश्चंद्र : अग्रणी पत्रकार- प्रा. अंजना विजन 127-131
24. हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति के लोकनृत्य : एक अनुशीलन -भारत सिंह 132-136
24. विराट पुरुष की कल्पना और अज्ञेय की मिथकीय दृष्टि डॉ माधुरी पाण्डेय गर्ग 137-141

राजनीतिक 'संघर्ष की यात्रा' हादसे

- डॉ. वैशाली विट्ठल खेडकर

आत्मकथात्मक साहित्य में रचनाकार के विचारों, भावों एवं मान्यताओं का प्रतिबिंब होता है। आत्मकथा एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक स्वयं महत्वपूर्ण होता है। लेकिन यह केवल लेखक की आत्मकहानी नहीं बल्कि समाजोपयोगी साहित्यिक विधा भी है। विभिन्न वर्गों के लेखकों ने आत्मकथा में अपने अनुभवों को इमानदारी से चित्रित करते हुए नए विश्व एवं नए विषय क्षितिजों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। आत्मकथा के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भी अतुलनीय है। नारी मुक्ति आंदोलन, आर्थिक स्वावलंबन, शिक्षा प्रसार, कानूनी प्रावधान एवं समाजसुधारकों के प्रयास आदि के कारण नारी जीवन में क्रांतिकारी उत्थान हुआ है। जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रसर होनेवाली नारी ने साहित्य जगत् में भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाई। इन महिला लेखिकाओं ने अपनी भोगी हुई जिंदगी और अनुभवों को संवदेना के साथ आत्मकथा में अभिव्यक्त किया है। लेखिकाओं की आत्मकथाओं में पाठकों के सामने नारी जीवन के अनेक अस्पर्शित, अनजाने विषय उद्घाटित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप नारी की ओर देखने की परंपरागत मानसिकता एवं सोच में परिवर्तन आ रहा है। महिलाओं के लिए आवश्यक कानूनी प्रावधान और सुधार पर बल दिया जा रहा है। इससे लाभान्वित महिलाएँ पुरुष प्रधान समाज के दोहरे मानदंडों और अत्याचारमूलक व्यवस्था का विरोध कर रही हैं।

भारतीय संविधान में पुरुषों और महिलाओं को समान स्थान प्रदान किया गया है लेकिन राजनीतिक स्तर की दृष्टि से महिलाएँ अभी भी पुरुषों के पीछे हैं। भारत भले ही विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के सपने देख रहा हो मगर महिलाओं के राजनीतिक स्तर में सुधार अभी भी आकाश कुसुम बना हुआ है। हालाँकि 20 वीं शताब्दी के आरंभ में ही महिलाओं की स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए समितियाँ स्थापन हो गई थी। इसके लिए सरोज नलिनी दत्ता तथा सरला देवी चौधरानी ने विशेष प्रयास किया था। सन् 1917 में वुमेन्स इंडियन एसोसिएशन तथा ऑल इंडिया वुमेन्स कान्फ्रेंस का राष्ट्रीय स्तर पर गठन किया गया था। गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाएँ सहभागी हुई थी। महिलाएँ खादी पहनती थी. नमक बनाती थी. शराब व विदेशी उत्पादों को बेचनेवाले दुकानों के सामने धरना देती थी, लाठी व गोलियों का सामना करती थी। अर्थात् स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों की भागीदारी स्पष्ट दिखाई देती है। इन सभी प्रयासों से भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन स्त्रियों की आजादी तो पुरुषों की गुलाम होकर रह गई। स्वतंत्रता के बाद स्त्रियों को अपने मूलभूत अधिकारों के लिए ही लड़ना पड़ा। इस दृष्टि से महिला विकास एवं उनमें चेतना जागृति का प्रयास अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष (1975) और अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक में किया गया। पंचवार्षिक योजनाओं के इतिहास में पहली बार योजना का 27 वा पूरा अध्याय 'महिला और विकास' शीर्षक से रखा गया, जिसका उद्देश्य नारी शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार की विशेष कार्यनीति निर्धारित करना था। साथ ही कानूनी प्रावधान में आवश्यक सुधार करते हुए नए कानून पारित किए गए।